बारह मील लंबा, माँ का प्यार

ग्लेंडा अर्मांड

बारह मील लंबा, माँ का प्यार

वो एक विशेष रात थी. माँ मिलने आई थी. माँ द्वारा लाए अदरक के मीठे केक से फ्रेडरिक का पेट भरा हुआ था. जैसे ही फ्रेडरिक माँ की गोद में बैठा, उनकी गर्माहट और उनके गुनगुनाने की आवाज़ मोमबत्ती से रोशन रसोई में भर गई.

फ्रेडरिक ने सोचा कि जब वो माँ और दादी-माँ बेट्सी के साथ था, तो वो कितना खुश था. अब वो उनसे बहुत दूर पुराने मालिक के घर में रहता था, जहाँ पर रसोई बनाने वाली बूढ़ी आंटी कैटी उसकी देखभाल करती थीं.

जब माँ ने गाना बंद कर दिया, तो फ्रेडरिक ने पूछा, "माँ, मैं तुम्हारे साथ क्यों नहीं रह सकता?"

"काश, तुम मेरे साथ रह पाते, फ्रेडरिक," माँ ने कहा. "लेकिन तुम जानते हो कि मैं पूरे दिन मक्का के खेतों में काम करती हूँ. इसलिए मैं तुम्हारी देखभाल नहीं कर पाऊंगी."

"क्या मैं आपसे मिलने आ सकता हूँ?" फ्रेडरिक से पूछा.

''नहीं बेटा. वो जगह बहुत दूर है."

"कितनी दूर?" उसने पूछा.

"बारह मील दूर.''

"पर आप तो वहां से चलकर आई हैं, माँ."

"ओह, वो मेरे लिए बहुत दूर नहीं है," माँ ने कहा. "जिस तरह से मैं चलती हूं मैं उस यात्रा को छोटा बना देती हूँ."

"माँ, मुझे बताओ कि तुम कैसे चलती हो, माँ, बताओ कि तुम उस दूरी को कैसे छोटा करती हो."

फ्रेडरिक ने माँ की ओर देखा. जब वो अपने बेटे को देखकर मुस्कुराईं तो उनकी आँखों में मोमबत्ती की रोशनी झलक रही थी.

"मेरे लिए हर मील विशेष होता है, फ्रेडरिक. हर मील कुछ अलग करने के लिए होता है."

अब फ्रेडरिक का पसंदीदा हिस्सा आया.

"पहला मील किस लिए होता है, माँ?" उसने पूछा.

"पहले मील में मैं भूलने की कोशिश करती हूँ," माँ ने उत्तर दिया.

"तुम क्या भूलती हो?"

"मैं भूलती हूं कि मैं कितनी थकी हूं. मैं अपनी पीठ का दर्द भूलती हूँ और अपने हाथों और पैरों का दर्द भी. मैं भूल जाती हूं कि मैंने आज पूरे दिन काम किया है और कल जल्दी सुबह मुझे फिर खेतों में काम करना होगा. और जब भूलना ख़त्म हो जाता है, फिर मैं याद करना शुरू करती हूँ. दूसरा मील याद करने के लिए होता है."

"दूसरे मील में आप क्या याद करती हैं?" फ्रेडरिक ने पूछा.

"मैं तुम्हें याद करती हूं, फ्रेडरिक. मैं याद करती हूँ कि तुम्हें गिलहरियों का पीछा करना पसंद है. मैं याद करती हूँ कि तुम कैसे अपना खाना खाते हो. मैं याद करती हूँ कि तुम्हें कैसे सवाल पूछना पसंद हैं!"

फ्रेडरिक हँसा. फिर माँ ने उसे अपने पास खींच लिया. "मैं यह याद करके इतनी खुश होती हूँ कि तुम मेरे बेटे हो," उन्होंने कहा.

फ्रेडरिक उठ बैठा और अपने सीने को फुलाया. "मैं हेरिएट बेली का बेटा हूँ!"

"याद रखना कि जब आंटी कैटी तुम पर गुस्सा हों," माँ ने चुपचाप कहा. फिर उन्होंने ऊपर देखा और आंटी कैटी को रसोई को ऊपर चलते हुए सुना.

"आप और क्या याद करती हैं, माँ?" फ्रेडरिक ने पूछा.
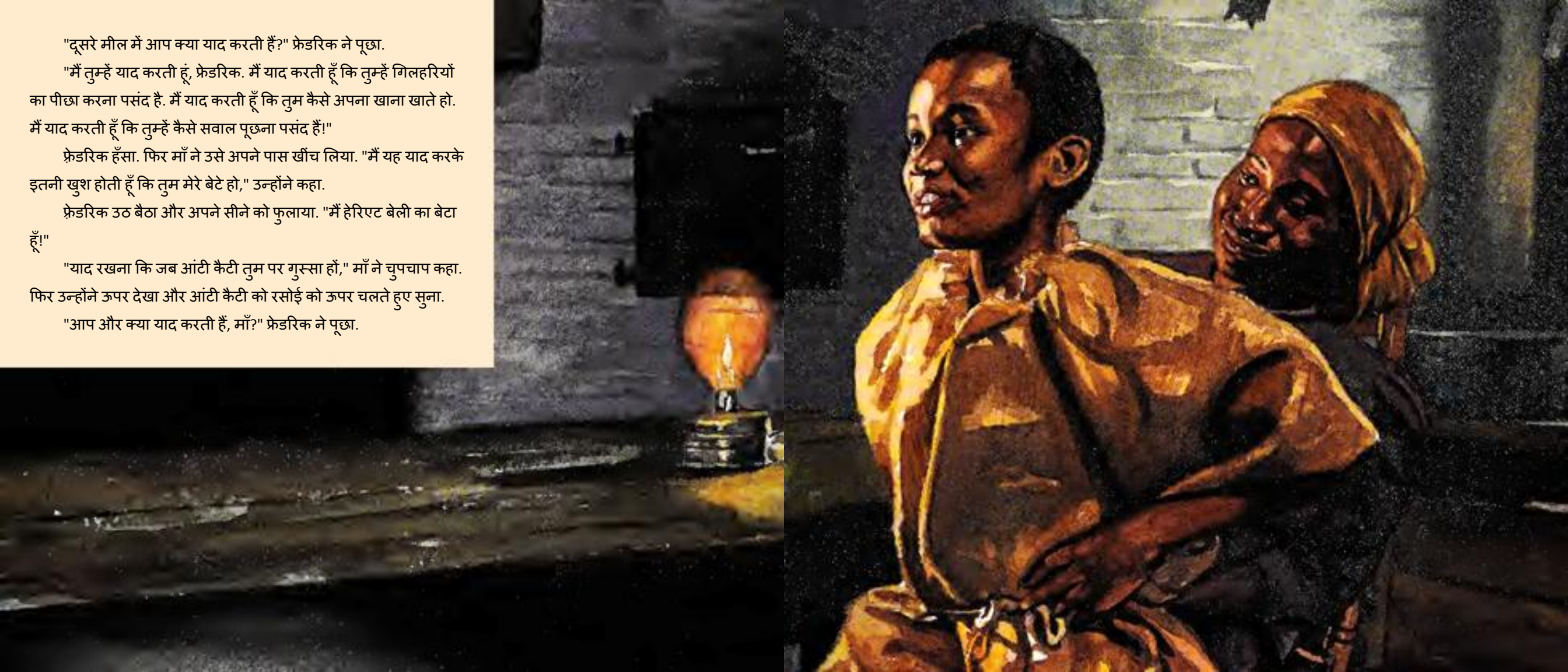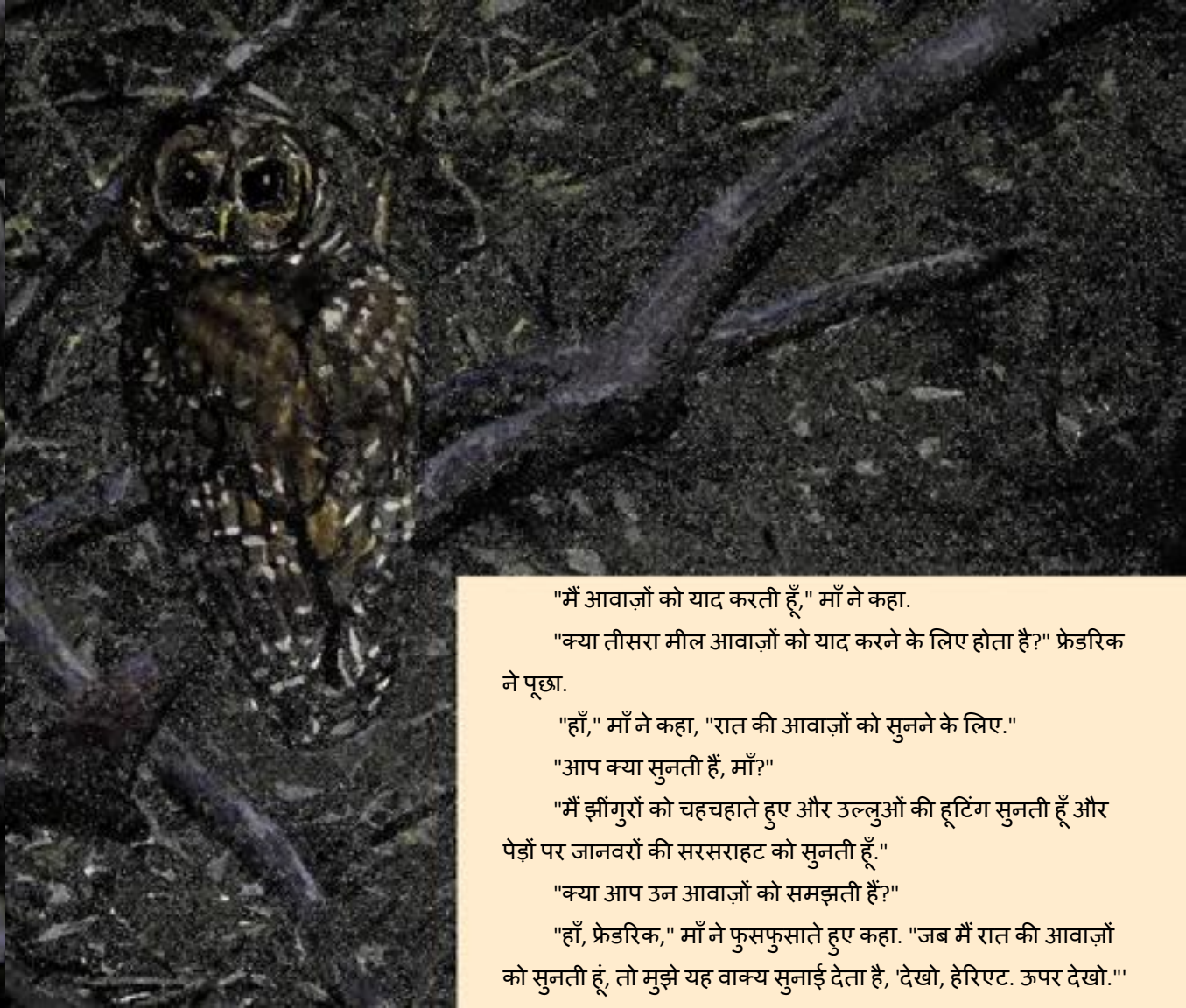
"मैं आवाज़ों को याद करती हूँ," माँ ने कहा.

"क्या तीसरा मील आवाज़ों को याद करने के लिए होता है?" फ्रेडरिक ने पूछा.

"हाँ," माँ ने कहा, "रात की आवाज़ों को सुनने के लिए."

"आप क्या सुनती हैं, माँ?"

"मैं झींगुरों को चहचहाते हुए और उल्लुओं की हूटिंग सुनती हूँ और पेड़ों पर जानवरों की सरसराहट को सुनती हूँ."

"क्या आप उन आवाज़ों को समझती हैं?"

"हाँ, फ्रेडरिक," माँ ने फुसफुसाते हुए कहा. "जब मैं रात की आवाज़ों को सुनती हूं, तो मुझे यह वाक्य सुनाई देता है, 'देखो, हेरिएट. ऊपर देखो.'"

"क्या फिर चौथे मील में आप ऊपर देखती हैं?" फ्रेडरिक ने पूछा.

माँ ने सिर हिलाया. "हाँ, तब मैं ऊपर देखती हूँ सितारों की ओर."

"कितने सितारे, माँ?"

"अनगिनत. उन्हें गिनना मुश्किल होगा. कभी-कभी मैं उन सभी को अपने सामने फैला हुआ पाती हूँ. कभी-कभी वे पेड़ों की पत्तियों के बीच में से मुझे झपकी मारते हैं. मैं सितारों को देखती हूं, और मैं दिल अचरज से भर जाता है."

"आप किस बारे में अचरज करती हैं?" फ्रेडरिक ने पूछा.

"पांचवां मील मैं भगवान के बारे में सोचते हुए बिताती हूं. उस भगवान के बारे में जिसने चाँद-सितारों और जानवरों को बनाया और तुम्हें और मुझे भी... .."

"माँ?"

"हाँ, फ्रेडरिक?"

"भगवान ने हमें गुलाम क्यों बनाया?"

"भगवान ने हमें गुलाम नहीं बनाया, फ्रेडरिक. हम सभी भगवान के ही बच्चे हैं. जल्द ही एक बेहतर दिन आएगा."

"आपको कैसे पता?" फ्रेडरिक ने पूछा.

"क्योंकि मैं प्रार्थना करती हूँ," माँ ने उत्तर दिया.

"आप छठा मील प्रार्थना करते हुए बिताती हैं," फ्रेडरिक ने हाथ जोड़कर कहा. "मैं भी प्रार्थना करता हूं, माँ. चाचा इसहाक ने मुझे प्रार्थना सिखाई है."

"जब मैं एक बच्ची थी तब चाचा इसहाक ने मुझे भी वो प्रार्थना सिखाई थी. वो बुद्धिमान हैं और बूढ़े हैं. वो अफ्रीका में पैदा हुए थे."

"अफ्रीका कहाँ है?" फ्रेडरिक ने पूछा.

"बहुत दूर," माँ ने कहा,

"वो चलकर जाने के लिए बहुत दूर है?"

"हाँ. मेरे लिए भी!" माँ ने हंसते हुए कहा. "उसके लिए एक विशाल समुद्र को पार करना होगा."

"समुद्र कितना चौड़ा है?" फ्रेडरिक से पूछा.

"वो मापने के लिए बहुत बड़ा है."

"क्या अफ्रीका के लोग स्वतंत्र हैं?"

"वे स्वतंत्र हैं, लेकिन अफ्रीका में भी जीवन काफी कठिन है. जब लोग स्वतंत्र होते हैं, तब उन्हें कड़ी मेहनत से भी थकान नहीं होती है. यही मैं प्रार्थना करती हूं, फ्रेडरिक. मैं प्रार्थना करती हूं कि एक दिन हम सभी स्वतंत्र हों. और प्रार्थना करने के बाद मेरा गाने का मन करता है."

"सातवां मील गाने के लिए होता है!" फ्रेडरिक ने कहा. "आप क्या गाती हैं, मामा? उदास गीत या खुशी के गीत?"

माँ ने जवाब दिया, "मेरा दिल जो महसूस करता है, मैं वही गाती हूं. गाने से मेरी आत्मा हल्की होती है, चाहे गीत खुशी का हो या ग़मगीन. और जब मेरी आत्मा हल्की होती है, फिर मैं आठवां मील चलने के लिए तैयार होती हूं."

"आठवें मील में आप क्या करती हैं?" फ्रेडरिक ने पूछा.

"आठवां मील मुस्कुराने के लिए होता है. मैं खुशी की चीजों के बारे में सोचती हूं. मैं अच्छे, खुशहाल समय के बारे में सोचती हूं."

"किस खुशहाल समय के बारे में, माँ?"

"मक्का की कटाई का समय जब हम फसल काटने के लिए एक-दूसरे की मदद करने के लिए एक खेत से दूसरे खेत में जाते हैं. हम देखते हैं कि कौन सी टीम सबसे तेजी से कटाई करती है और मक्का का सबसे बड़ा पहाड़ बनाती है. तुमने अपने जीवन में मक्का का इतना ऊंचा ढेर कभी नहीं देखा होगा!"

"कितना ऊँचा?" फ्रेडरिक से पूछा.

"उसे मापना बहुत मुश्किल होगा," माँ ने कहा. "लेकिन वो दिल हल्का करने, हंसने और मजाक करने का भी समय होता है! फिर, काम ख़त्म होने के बाद, खूब खाना और नाचना भी होता है."

"नृत्य!" फ्रेडरिक ने कहा. "माँ, क्या आप नाचती भी हैं?"

"बिल्कुल, मक्के का नाच, बाज़ का नृत्य, और कबूतर के पंख का नाच."

फ्रेडरिक उन नामों को सुनकर हँसा.

"चलो तुम्हें नाचते हुए देखते हैं, मिस्टर," माँ ने कहा. "आओ, आज मैं तुम्हें कबूतर के पंख वाला नाच दिखाऊंगी."

वे उठे और मोमबत्ती की रोशनी में रसोई में नाचने लगे. माँ ने अपनी लंबी बाँहों को फड़फड़ाया और फ्रेडरिक ने अपनी छोटी बाँहों को हिलाया. माँ ने फ्रेडरिक को ऊपर उठाया और उसे गोल-गोल घुमाया, फिर उसे नीचे रखने से पहले अपने सीने से लगाया.

फ्रेडरिक जानता था कि वे आखिरी मील के करीब पहुंच रहे थे और माँ जल्द ही वापिस चली जाएँगी. इसलिए वो आखिरी मील के बारे में नहीं पूछना चाहता था. उसे लगता था कि अगर वे नाचते रहे और उसने कभी नहीं पूछा, तो फिर उसकी माँ कभी वापिस नहीं जाएंगी.

जैसे ही माँ ने उसे वापस कुर्सी पर रखा, माँ ने धीरे से पूछा, "क्या तुम जानते हो कि नौवां मील किसके लिए है, फ्रेडरिक?"

"वो धन्यवाद देने के लिए है."

"बिल्कुल सही. मैं अपने जीवन के लिए और अपनी अच्छी सेहत के लिए भगवान का शुक्रिया अदा करती हूं. मैं तुम्हारे लिए भी भगवान को धन्यवाद देती हूं, फ्रेडरिक. तुम्हें देखकर मुझे आशा मिलती है."

"तो फिर दसवां मील आशा के लिए होता है?"

"हाँ, फ्रेडरिक. मुझे तुमसे बहुत आशा है. मुझे आशा है कि एक दिन हम लोग एक-परिवार जैसे, साथ-साथ रहेंगे. तब हम स्वतंत्र होंगे."
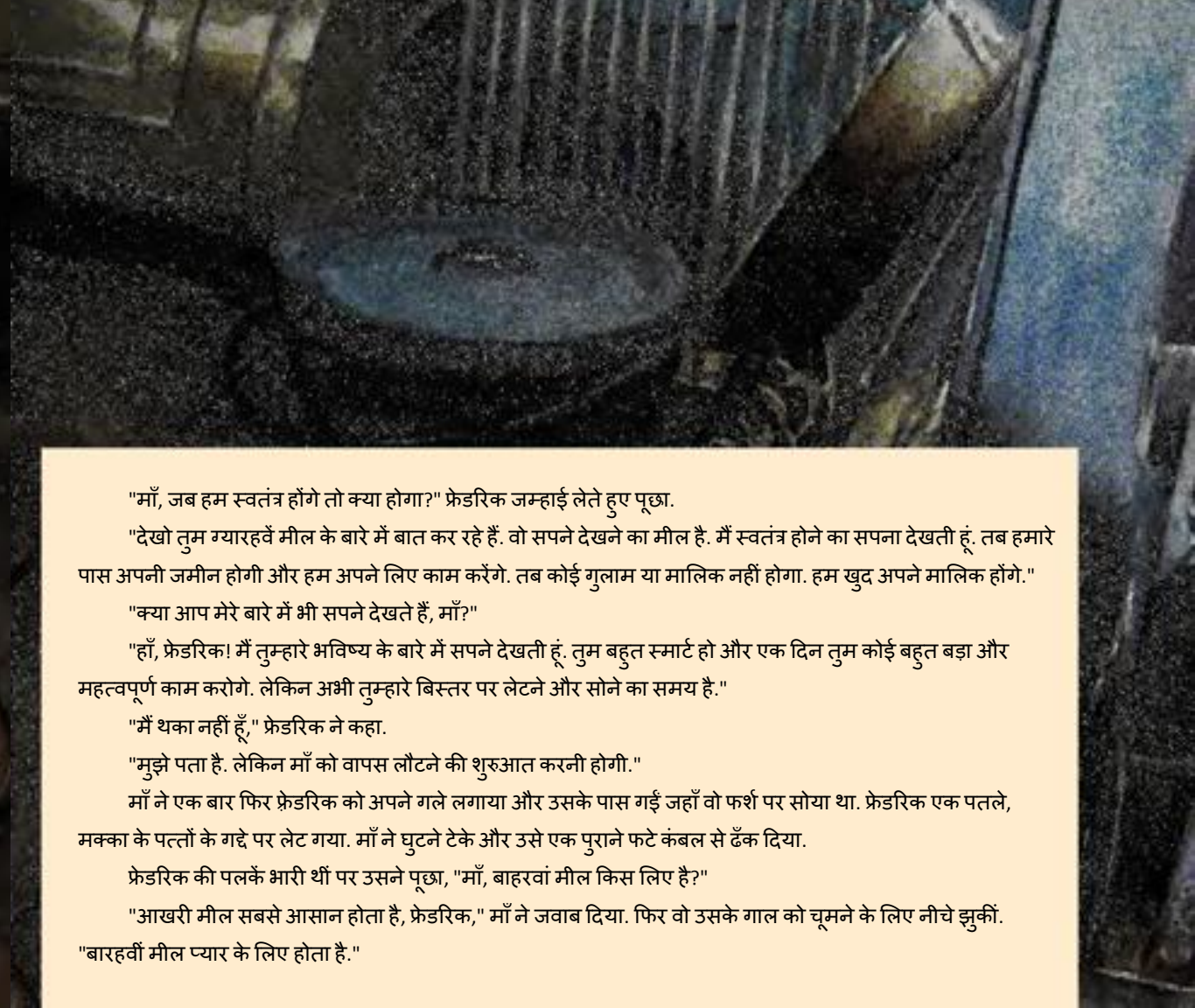
"माँ, जब हम स्वतंत्र होंगे तो क्या होगा?" फ्रेडरिक जम्हाई लेते हुए पूछा.

"देखो तुम ग्यारहवें मील के बारे में बात कर रहे हैं. वो सपने देखने का मील है. मैं स्वतंत्र होने का सपना देखती हूं. तब हमारे पास अपनी जमीन होगी और हम अपने लिए काम करेंगे. तब कोई गुलाम या मालिक नहीं होगा. हम खुद अपने मालिक होंगे."

"क्या आप मेरे बारे में भी सपने देखते हैं, माँ?"

"हाँ, फ्रेडरिक! मैं तुम्हारे भविष्य के बारे में सपने देखती हूं. तुम बहुत स्मार्ट हो और एक दिन तुम कोई बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण काम करोगे. लेकिन अभी तुम्हारे बिस्तर पर लेटने और सोने का समय है."

"मैं थका नहीं हूँ," फ्रेडरिक ने कहा.

"मुझे पता है. लेकिन माँ को वापस लौटने की शुरुआत करनी होगी."

माँ ने एक बार फिर फ़्रेडरिक को अपने गले लगाया और उसके पास गईं जहाँ वो फर्श पर सोया था. फ्रेडरिक एक पतले, मक्का के पत्तों के गद्दे पर लेट गया. माँ ने घुटने टेके और उसे एक पुराने फटे कंबल से ढँक दिया.

फ्रेडरिक की पलकें भारी थीं पर उसने पूछा, "माँ, बाहरवां मील किस लिए है?"

"आखरी मील सबसे आसान होता है, फ्रेडरिक," माँ ने जवाब दिया. फिर वो उसके गाल को चूमने के लिए नीचे झुकीं. "बारहवीं मील प्यार के लिए होता है."
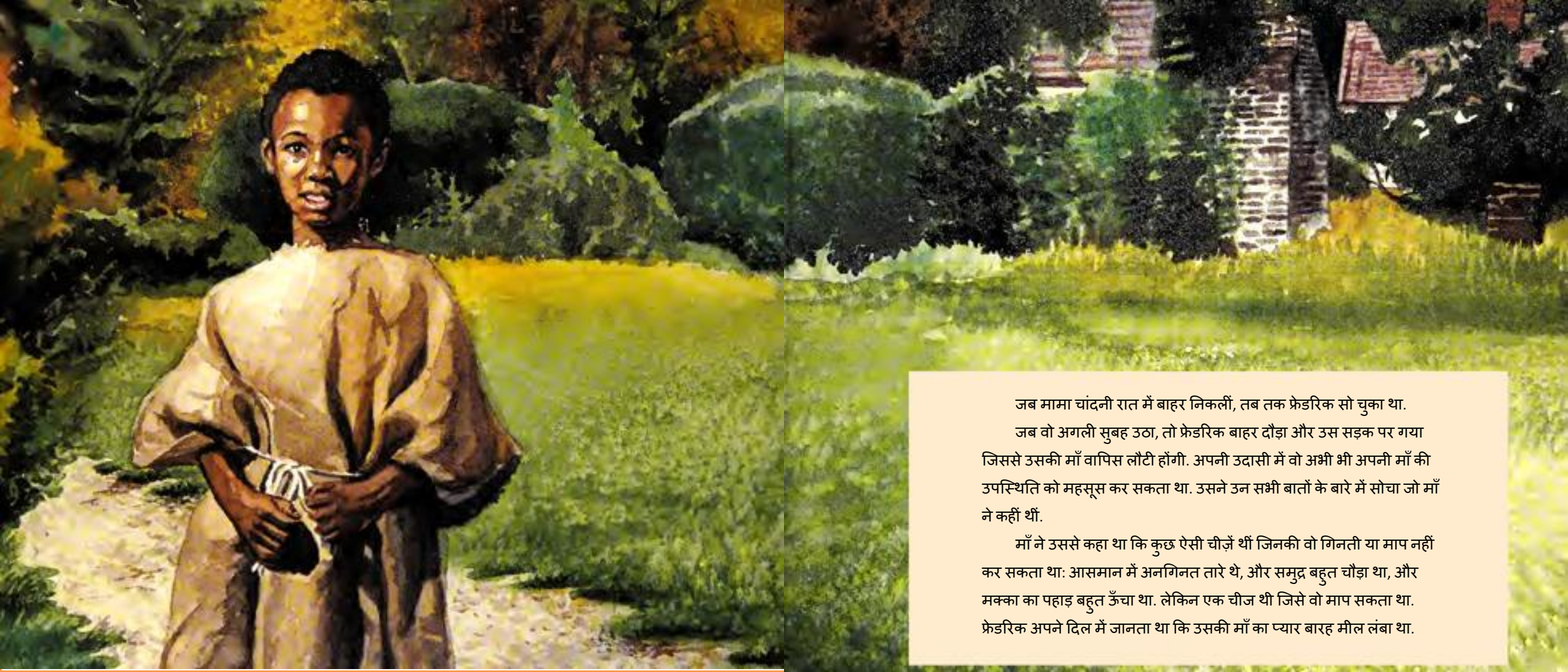
जब मामा चांदनी रात में बाहर निकलीं, तब तक फ्रेडरिक सो चुका था.

जब वो अगली सुबह उठा, तो फ्रेडरिक बाहर दौड़ा और उस सड़क पर गया जिससे उसकी माँ वापिस लौटी होंगी. अपनी उदासी में वो अभी भी अपनी माँ की उपस्थिति को महसूस कर सकता था. उसने उन सभी बातों के बारे में सोचा जो माँ ने कहीं थीं.

माँ ने उससे कहा था कि कुछ ऐसी चीज़ें थीं जिनकी वो गिनती या माप नहीं कर सकता था: आसमान में अनगिनत तारे थे, और समुद्र बहुत चौड़ा था, और मक्का का पहाड़ बहुत ऊँचा था. लेकिन एक चीज थी जिसे वो माप सकता था. फ्रेडरिक अपने दिल में जानता था कि उसकी माँ का प्यार बारह मील लंबा था.

अंत के शब्द

फ्रेडरिक ने अपनी आज़ादी ठीक वैसे ही हासिल की, जैसी उसकी माँ को उम्मीद थी. गुलामी से बचने के बाद, उसने अपना अंतिम नाम "बेली" से बदलकर "डगलस" कर लिया, ताकि उसके पूर्व मालिक के लिए उसे ढूंढना मुश्किल हो जाए. फ्रेडरिक डगलस ने अंततः अन्य दासों की स्वतंत्रता के लिए काम किया और एक प्रसिद्ध लेखक और सार्वजनिक वक्ता बना जिसने गुलामी के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाई. गुलामों की आजादी के बारे में राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के साथ चर्चा करने के लिए वो कई बार व्हाइट हाउस गया. जब अंत में दासता समाप्त हुई, तो डगलस महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई में शामिल हो गया.

हालाँकि डगलस की माँ अपने बेटे को बड़ा होते देखने के लिए जीवित नहीं रही, लेकिन वो जानता था कि माँ को उस पर गर्व होगा. डगलस ने अपनी सफलता का बहुत श्रेय अपनी माँ को दिया. अधिकांश दासों के विपरीत, हेरिएट बेली पढ़ सकती थीं. हो सकता है कि माँ ने अपने मालिक के परिवार के सदस्यों से ही पढ़ना सीखा हो. हेरिएट बेली शब्दों के साथ बहुत चतुर थीं, और वो उपहार उन्होंने अपने बेटे को भी दिया, शायद उन कीमती रात की यात्राओं के दौरान जब वो फ्रेडरिक से मिलने आती थीं. अपनी आत्मकथा में, डगलस ने लिखा कि मां ने उन्हें एक शक्तिशाली सबक सिखाया: कि वो "कोई बच्चा नहीं था, बल्कि किसी का बच्चा था." माँ के प्यार ने फ्रेडरिक डगलस को यह विश्वास दिलाया कि वो एक गुलाम बनने के लिए पैदा नहीं हुआ था, बल्कि वास्तव में कोई महान काम करने और एक उल्लेखनीय जीवन जीने के लिए पैदा हुआ था.

समाप्त